National Journal of
Hindi & Sanskrit Research

ISSN: 2454-9177
NJHSR 2025; 1(63): 09-11
© 2025 NJHSR
www.sanskritarticle.com

करूणा गायकवाड़
शोधार्थी,
पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त)
वि.वि. छत्तीसगढ़, बिलासप

डॉ.जयपाल सिंह प्रजापति
सहायक प्राध्यापक,
पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त)
वि.वि. छत्तीसगढ़, बिलासप

Correspondence:
करूणा गायकवाड़
शोधार्थी,
पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त)
वि.वि. छत्तीसगढ़, बिलासप

विद्यासागर नौटियाल के उपन्यास 'मेरा जामक वापस दो' में राष्ट्र विकास का चिंतन

करूणा गायकवाड़ , डॉ.जयपाल सिंह प्रजापति

सारांश-

पहाड़ों के प्रेमचन्द के नाम से प्रसिद्ध विद्यासागर नौटियाल आम आदमी के जीवन को चित्रित करने वाले उपन्यासकार है। नौटियाल जी ने अपना रचना संसार गढ़वाल को बनाया है परन्तु उनके लेखक का प्रभाव क्षेत्र समग्र विश्व में और विशेषकर भारत में उपलब्ध है। लेखक ने 'मेरा जामक वापस दो' उपन्यास में प्रकृति की शक्ति को जन की शक्ति बताया है। प्राकृतिक आपदा का सजीव चित्रण उपन्यास में दर्शाया गया है। लेखक ने चुटकीली और अपनी तीखी लेखन शैली में उपन्यास के माध्यम से राष्ट्र विकास की चिंता व्यक्त करते हुए भारतीय न्याय व्यवस्था, सामाजिक भेदभाव, भ्रष्टाचार, गरीबी एवं असंतुलित विकास जैसी समस्याओं को उजागर किया है। उपन्यास का कथानक पाठक को सोचने पर मजबूर कर देता है। जब तक समाज में अन्याय एवं भ्रष्टाचार व्याप्त है तब तक प्रबुद्ध लेखक अपनी लेखनी से उस पर प्रहार करने का कार्य करता रहेगा। विद्यासागर नौटियाल जी ने देश की वर्तमान व्यवस्था पर प्रहार एवं राष्ट्र विकास का चिंतन करने का कार्य अपनी लेखनी से किया है।

बीज-बिन्दु: अन्याय, भ्रष्टाचार, असंतुलित विकास विद्यासागर नौटियाल का साहित्य जल, जमीन और जंगल से जुड़ा है। 'मेरा जामक वापस दो' उपन्यास में टिहरी बांध के निर्माण के कारण बेघर टिहरी की जनता के दु:ख-दर्द तथा उत्तरकाशी में आये भूकंप की त्रासदी की जीवंत चित्रण किया गया है।

उपन्यास में भारत के दूरस्थ गाँवों में शिक्षा की बदहाल व्यवस्था की सच्चाई को उजागर किया गया है। सिल्ला गाँव के प्रधान अपने गाँव में स्कूल खुलवाने के लिए उत्तरकाशी जाकर डी.एम. साहब से गाँव के हालात को बताता है।

"प्रधान ने बकरी की खाल से बने अपने लंबे थैले के भीतर से दो सींग बाहर निकाले और उन्हें डी.एम. की मेज पर खड़ा कर दिया।

"यह क्या है?

" मेढ़े के सींग हैं, हुजूर!"

"इनका क्या करना है?"

"हम भेंड़ों के साथ रहते हैं साब! आजादी के इतने बरसों के बाद भी हमारी गिनती अभी तक आदमियों में नहीं की जाती। हमारे सिल्ला (सीलन-भरा) से तो सूरज भी रूठा ही रहता है। आज़ादी के घाम की किरणें भी कभी हमारे हिस्से नहीं आ पाई। सबके विकास के लिए नए-नए रास्ते खुल रहे हैं, पर सरकार हमारे गाँव में एक स्कूल तक खोलने की मंजूरी नहीं दे सकती। हमारी आने वाली संताने भी हमारी तरह भेड़ की भेड़ बनी रहेंगी।"[1]

भारत तेजी से विकास कर रहा है परंतु विकास में पर्यावरणीय संतुलन का ध्यान न रखने के कारण भयानक प्राकृतिक त्रासदी का सामना आम जनता को करना पड़ता है। लेखक ने उपन्यास में उत्तरकाशी में आये भूकंप त्रासदी का चित्रण किया है। उपन्यास में जामक पचास घरों के छोटे से गाँव का चित्रण है।

इसमें काली और हरि दो भाइयों के परिवारों का वर्णन किया गया है। जैंती और खिला की प्रेम कहानी के द्वारा पवित्र प्रेम की शक्ति और प्रेम की स्मृति हृदय में बना रहना बताया गया है।

लेखक ने समाज में स्त्री शिक्षा के प्रति नजरिया बताया हैं।

मास्टर जी हरि को बेटियों को शिक्षा देने के लिए समझाते है।

''यह तुम्हारा बेटा है ?''

''हाँ, मास्टर जी !''

''तुम्हारे घर में कितने बच्चे है ?''

''लड़का तो एक यही है, साहब।''

''और लड़कियाँ ?''

''भाई की है साब ! सिर्फ एक बेटी। और कोई लड़के नहीं है हमारे घर में।''

''बेटी को भी पढ़ाना चाहिए।''

अचानक मिले सुझाव से हरि का दिमाग चकराने लगा।

''ऐसा तो नहीं हो सकता साब कि लोग घर के धाण-धंधे को बंजर छोड़ दे और बेटियों को भी स्कूल में भेज दे।''[2]

उपन्यास में टिहरी बांध निर्माण के विस्फोट से भयभीत जामकवासियों की कठिनाइयों को दिखाया गया है। लेखक लिखते है- ''धमाकों का सिलसिला चालू हो गया था हर रोज़ सुबह-शाम कंपनी की ओर से किए जा रहे भारी ब्लास्टंग से गाँव की धरती कांपने लगती थी। कुल ग्रामवासी और उनके पालतू पशु आंतक के साये में जीने लगे। एक नियमित, स्थायी आंतक। हर रोज़। हर सुबह, हर शाम। जंगल के पेड़ों की शाखों पर बैठकर और फुदकते-फुदकते विभिन्न स्वरों में गीत सुनाकर वातावरण को गंुजायमान और जीवंत रखने वाले बड़े पक्षियों और नन्हीं चिड़ियाओं की संख्या दिन-ब-दिन घटने लगी थी। ऐसा महसूस होने लगा कि वे उनकी बस्ती और वन को ग्रामवासियों के भरोसे छोड़कर कहीं अन्यत्र जाने लगे हैं।''[3]

उपन्यास में जब जामकवासी अपनी समस्याओं को लेकर डी.एम. के आफिस जाते है तो आफिस के बाबूओं की अपने कार्य के प्रति उदासीनता दिखलाई देती है।

जामक गाँव में आए भूकंप की भयावहता को बताते हुए लेखक लिखते है-

''गाँव के कुछ लड़के आए। अब तक दस लाशों को अपने कंधों पर ढोते हुए भागीरथी के हवाले कर चुके थे। सभी मृत देहों का दाह-संस्कार ठीक ढंग से करने के लिए उतनी लकड़ियां भी घाट पर नहीं पहुँचाई जा सकती थी। मरने वालों की संख्या ज़्यादा थी। आधा गांव जा चुका था। जिन्होंने किसी के शवों को कंधा देना था, वे खुद ही कंधों पर चढ़कर भागीरथी-तट पर जाने लगे थे। बूढ़े, नौजवान। घरों के अंदर चिड़ियों की तरह चहचहाती, हंसती-खेलती, यौवन-रस से लबालब युवती, बहू-बेटियां, जिनका पारिवारिक कायदों के अनुसार, शवों के साथ घाट तक जाने का कायद नहीं होता, वे खुद ही शव बनकर एक बड़ी झील की ओर जाने लगी थीं। वह झील कंपनी ने कुछ समय पहले, भागीरथी के अविरल प्रवाह को रोककर बनाई गई थी। कंपनी को उस बड़ी झील का पानी एक सुंरग के अंदर डालना था। उस संुरग का निर्माण करने के लिए वे हर रोज़ जामक की जड़ पर सुबह-शाम भारी विस्फोट करते रहते थे। उन विस्फोटों ने जामक की बुनियादें उखाड़ दीं।''[4]

उपन्यास में रहमदिल जनता से सच्चे सेवक के रूप में डी.एम. मल्होत्रा जैसे चरित्र को दिखाया गया है। मल्होत्रा भूंकप पीड़ित जनता के बीच जाकर उन का हाल जानता है अपने व्यवहार एवं सहायता से जनता का दिल जीत लेता है। भ्रष्ट अफसर शाही मल्होत्रा के ऐसे व्यवहार को बर्दाश्त नहीं करती मल्होत्रा का तबादला कर दिया जाता है।

''उसे ट्रांसफर करके फौरन लखनऊ बुलवा लो। देश राज आज ही हेलिकॉप्टर से उत्त रकाशी चला जाए और मल्होत्रा को फौरन रिलीव कर दे। मल्होत्रा उसी हेलिकॉप्टर से लखनऊ चला आए।''[5]

भूकंप में भी कुछ लोग अपना स्वार्थ सिद्ध करने में लगे रहते है। राहत सामाग्री भूकंप प्रभावित इलाकों में पहुँचने से पहले ही लूट ली जाती है। मनुष्य के अंदर से मनुष्यता को मरता देख लेखक लिखते है- ''नहीं होती थी, लेकिन अब होगी। भविष्य अच्छा नहीं लग रहा है। रास्ते पर बाकायदा खाई खोदकर के प्रशासन को लुंज-पुंज बनाने लगे है। लगता है, यहाँ आम आदमी के भीतर का इंसान गायब हो चला है। जिसकी वजह से हम पूरे पहाड़ को जानते आए थे।''[6]

उपन्यास में लेखक ने भूकंप की त्रासदी के बाद जनता की स्थिति एवं उसके प्रति प्रशासन की उदासीनता को दर्शाया है। राहत सामाग्री और चिकित्सा की टीमें रिसीविंग के लिए दफ्तर के चक्कर काटते चित्रित हुए है।

उपन्यास में वर्तमान में मानव मूल्यों के होते ह्रास को चित्रित किया गया है। रास्ते में राहत सामाग्री को लूट लिया जाना मानव के नैतिक मूल्यों के पतन को दर्शाता है।

पहाड़ के लोग अपने शांत, सीधे एवं सौम्य स्वभाव के लिए जाने जाते है परन्तु अब उनकी प्रवृत्ति में भी परिवर्तन हो गया है। उपन्यास में आपदा के समय कुछ लोग राहत सामाग्री को लूटने से भी नहीं चूकते। ट्रक ड्रायवर चतरसिंह के ट्रक से माल लूट जाने के बाद उसका सहायक कृपाल कहता है-

''पहाड़ का तो सब कुछ टूट गया है उस्ताज जी ? पूरा पहाड़ खिसक गया है !''

''सब कुछ बर्बाद हो चला है किरपाल। उन तमाम घावों को धरती माता कुछ समय के बाद अपने आप भर देगी। पर जो पहाड़ का आदमी टूट गया है, वह अब नहीं सुधर पाएगा। उसका कोई इलाज नहीं।''

''मैं कुछ समझा नहीं उस्ताज जी !''

''बेटे, हमने घुंटी में जितना कुछ देखा, वैसी हरकत पहाड़ के आदमी कभी कर ही नहीं सकते-हम लोग जिंदगी-भर यही मानते-जानते आए थे। हमारे दिमाग में अब तक यही भरा है कि पहाड़ का आदमी देवता

जैसा होता है, सीधा और भोला-भाला। पर भूकंप ने उस सीधे-सादे इंसान को तोड़कर उसके सुभाउ को मैदानी डकैतों जैसा बना दिया है। चंबल के डाकू भी भूंकप के तोड़े हुए लोगों की जीवन-रक्षा के लिए राहत का सामान ले जा रही गाड़ी पर यों नहीं झपटेंगे। वे उसे आसानी से निकल जाने देंगे।"[7]

नौटियाल जी का उपन्यास 'मेरा जामक दो' गढ़वाल को केंद्रित करके लिखा गया है परन्तु इसमें दिखाया गया नैतिक मूल्यों का पतन सम्पूर्ण देश की स्थिति पर लागू होता है। उपन्यास में भारत की वास्तविकता का सही चित्रण है। गरीब के लिए लोकतंत्र कोई मायने नहीं रखता है। गरीब के हित की बात कोई नहीं करता है।

निष्कर्ष-

नौटियाल जी ने पहाड़ी समाज का जीवंत चित्र प्रस्तुत किया है। उनका साहित्य मनोरंजन के लिए न होकर समाज एवं राष्ट्र के विकास के लिए है। उन्होंने अपने साहित्य में समाज की समस्याओं-गरीबी, अशिक्षा, जातिगत भेदभाव, स्त्री शोषण को उजागर किया है। 'मेरा जामक वापस दो' उपन्यास में लेखक ने डी.एम. मल्होत्रा, डॉ. रैना एवं कर्मवीर जैसे सच्चे एवं नेकदिल इंसानों के माध्यम से समाज में नैतिकता का संदेश दिया है। इन पात्रों के माध्यम से इंसानियत, न्याय और कर्त्तव्यनिष्ठा को राष्ट्र विकास की मूल आवश्यकता बताया गया है। खिला और महेश जैसे पढ़े-लिखे नवयुवकों के माध्यम से राष्ट्र के विकास के लिए शिक्षा को आवश्यक बताया गया है। जैंती के माध्यम से राष्ट्र विकास के लिए स्त्री शिक्षा के महत्व को उजागर किया गया है। 'मेरा जामक वापस दो' उपन्यास के माध्यम से लेखक ने स्वार्थपरक राजनेताओं, व्यापारियों एवं भ्रष्ट अफसरशाही का उल्लेख करते हुए राष्ट्र विकास पर चिंता जाहिर की है। संतुलित पर्यावरणीय विकास के बिना सच्चे अर्थों में राष्ट्र का विकास संभव नहीं है।

संदर्भ-सूची-

1. नौटियाल, विद्यासागर, मेरा जामक वापस दो, किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृ.सं. 11-12
2. वही, पृ.सं. - 13
3. वही, पृ.सं. - 45
4. वही, पृ.सं. - 77
5. वही, पृ.सं. - 93
6. वही, पृ.सं. - 187
7. वही, पृ.सं. - 159